सूत्रधार– कलियुग तरिये बैठकर, प्रेम भक्ति की नाव।
ज्ञान योग सों बडौ है, प्रेम भक्ति कौ भाव।।
जिनके मन में भक्ति है, उनकौ है बड भाग।
भक्ति के ही पुत्र हैं, ज्ञान और वैराग।।
उद्धव कू अभिमान है, पायौ ज्ञान अपार।
पर नत–मस्तक है गयौ, लख गोपिन कौ प्यार।।
कृष्ण विरह में गोपियां, तडफत हैं दिन–रात।
हरे–भरे ये वृक्ष हू, बिनकू नहीं सुहात।।

प्रथम दृश्य

प्रांची गीत–**मधुवन तुम कत रहत हरे।**
सखी महिमा–अरी सखियों देखौ तौ सही मधुवन के ये वृक्ष श्याम सुन्दर के मथुरा चले जावे पे हू हरे भरे बने भये हैं।
सखी प्रिया–हॉ सखी इनकू तौ ठाड़े तै ही जर जानौ चाहिए।

सखी प्रियंका–अरी सखियों इन वृक्षन नै तौ अनीति ओढ़ राखी है अनीति।

सखी प्रार्थना–मैं तौ जे कह रही हूँ कै श्याम सुन्दर के विरह में इन्हें नख ते सिकलौं भस्मीभूत है जानौ चाहिए।

गीत प्रियंका–**निसिदिन बरसत नैन हमारे।**

द्वितीय दृश्य

सूत्रधार– उतै विरह में गोपिका, इतै कृष्ण बेचैन।
उत में नैना बरसते, इत में बरसें नैन।।
कृष्ण सोच में पड गये, ढूँढन लगे उपाय।
उद्धव गोकुल भेज हौं, प्रेम पाठ पढ आयै।।

ठाकुर जी–आज तौ मोकूँ अपने ब्रज की समस्त ब्रजवासिन की बहुत याद आ रही है। मैं यहॉ मथुरा में हूँ किन्तु या मथुरा में ब्रज कौ सौ एकहू सुख नहीं है। कहॉ सुख ब्रज कौ सौ संसार, कहॉ सुखद बंशीवट यमुना यह मन सदा विचार, कहॉ वन धाम कहॉ राधा संग कहॉ नारी तन ताम, कहॉ रस रास बीच अन्तर सुख सूर श्याम वन काम। मैं यहॉ मथुरा में हूँ किन्तु यहॉ मेरी बन्शी कहॉ,बंशी ध्वनि सौ बाबरी भई वह ब्रज की गोपी कहॉ, बंशी चोर प्राणेश्वरी श्री राधा कहा, वात्सल्य रस की मूर्ति मेरी मईया यशोदा कहॉ, मेरे नन्द बाबा कहॉ मेरे ग्वाल बाल कहॉ। तात्पर्य या मथुरा में ब्रज कौ सौ एकहू सुख नहीं है किन्तु मैं या दुख कू कहूँ तौ कौन सौ कहूँ या दुख कू कोउ समझवे वारौउ तौ नहीं है। कहैं कहवे सौ मन कौ दुख कछु घट जाये है। किन्तु हॉ या मथुरा में मोकू एक सखा तौ मिलौ है उद्धव किन्तु वह ब्रहम ज्ञानी है, बात बात में ब्रहम ज्ञान कू छांटे है सबरे रस कू जराये दे है, जैसौ सूखौ काट तैसौ ही वह नीरस है। आज मैं एक काम करूँ या उद्धव कू मैं ब्रज में भेज दउँ। उद्धव कू ब्रज में भेजवे